
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
ARJUN BATCH
कक्षा-12
इतिहास
अध्याय-1 | भाग-9
ईंट मनके तथा अस्थियां
हड़प्पा सभ्यता-एकदम BASIC से!

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1. हड़प्पा सभ्यता के शहरों में लोगों को उपलब्ध भोजन सामग्री की सूची बनाइये। इन वस्तुओं के उपलब्ध कराने वाले समूहों की पहचान कीजिए।

उत्तर : हड़प्पा सभ्यता के शहरों में लोगों को उपलब्ध भोजन सामग्री की सूची निम्नलिखित है –

1. पेड़ पौधों से प्राप्त उत्पाद
2. मांस तथा मछली
3. गेहूं, जौ, दाल, सफेद–चना, तिल, बाजरा तथा चावल के दाने मिले हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

→ दोहरी कृषि
→ जुते हुए खेत
→ नहर

भेड़, बकरी, भैंस और सुअर के मांस का सेवन करते थे। इसकी पुष्टि इस बात से हुई है कि हड़प्पा स्थलों पर इनकी हड्डी मिली है। हिरण तथा घड़ियाल की भी हड्डियां मिली है। संभवत: ये इनके मांस का भी सेवन करते थे।

भोजन सामग्री उपलब्ध कराने वाले समूह

भोजन सामग्री	समूह
पेड़ पौधों से प्राप्त उत्पाद	संग्राहकों द्वारा
मांस तथा मछली	आखेटकों द्वारा
गेहूं, जौ, दाल, सफेद चना, तिल, बाजरा	किसानों द्वारा

→ शिकारी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. पुरातत्वविद हड़प्पाई समाज में सामाजिक-आर्थिक भिन्नताओं कापता किस प्रकार लगाते हैं ? वे कौनसी भिन्नताओं पर ध्यान देते हैं ?

उत्तर : पुरातत्वविद हड़पई समाज में रहने वाले लोगों के बीच सामाजिक तथा आर्थिक भिन्नताओं का पता लगाने के लिए कई विधियों का प्रयोग करते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सामाजिक भिन्नता



- शोषण
  - अमीर
    - → ईंट
    - → आभूषण
    - मृदभाण्ड
  - गरीब
    - इंटे ✗
    - –
    - –
- वस्तु
  - उपयोगी
    - अवतल ✓
    - चक्की ✓
    - सुई
    - हरपर
  - विलास
    - मृदभाण्ड
    - फयॉन्स
    - → बाहर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. शवाधान द्वारा : हड़प्पाई लोग शवों के गर्तो में दफनाते थे। आर्थिक एवं सामाजिक स्तरानुसार ये गर्ते भिन्न प्रकार की होती थी। कुछ गर्तों की सतहों पर ईंटों की चिनाई की गयी थी अत: वे उच्च स्तर के लोग होंगे।

कुछ कब्रों में मृदभाण्ड एवं आभूषण मिले हैं। कुछ पुरूषों एवं महिलाओं की कब्रों में आभूषण मिल हैं। अत: ये भी उच्च स्तर के होंगे। कहीं-कहीं पर कब्रों में तांबे के दर्पण भी मिले हैं अत: ये भी किसी विशेष वर्ग के लोग होंगे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. विलासिता की वस्तुओं की खोज के द्वारा : सामाजिक भिन्नता को पहचानने का एक अन्य तरीका पुरावस्तुओं का अध्ययन भी है।

उपयोगी वस्तुएं : पत्थर व मिट्टी जैसे सामान्य पदार्थों से बनी वस्तुएं जिन्हें आसानी से बनाया जा सकता है। जैसे – चक्कियां, मृदभाण्ड, सुईयां, झांबा आदि। ये सामान्य रूप से सभी बस्तियों में सर्वत्र पायी गयी हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

विलासिता की वस्तुएं : वे कीमती वस्तुऐं जो दुर्लभ हो अथवा महंगी तथा स्थानीय स्तर पर अनुपलब्ध

जैसे – फयान्स से बने पात्र

ये उच्च स्तरीय लोग ही काम में लेते होंगे।

इस प्रकार से समाज में विषमताऐं थी तथा ये महंगी वस्तुऐं हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ों में ही मिली है। कालीबंगा जैसे स्थानों पर बिल्कुल भी नहीं। अत: हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो के लोगों का आर्थिक स्तर उच्च रहा होगा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

3. क्या हम इस तथ्य से सहमत है कि हड़प्पा सभ्यता के शहरों की जल निकास प्रणाली, नगर योजना की ओर संकेत करती है ? अपने स्तर के कारण बताइये ?

उत्तर : हम इस तथ्य से पूर्णतया सहमत हैं कि हड़प्पा सभ्यता के शहरों की जल निकास प्रणाली नगर योजना की ओर संकेत करती है इसकी पुष्टि निम्न तथ्यों से होती है–

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल निकास प्रणाली ⟶ नगर नियोजन ?

ढकी

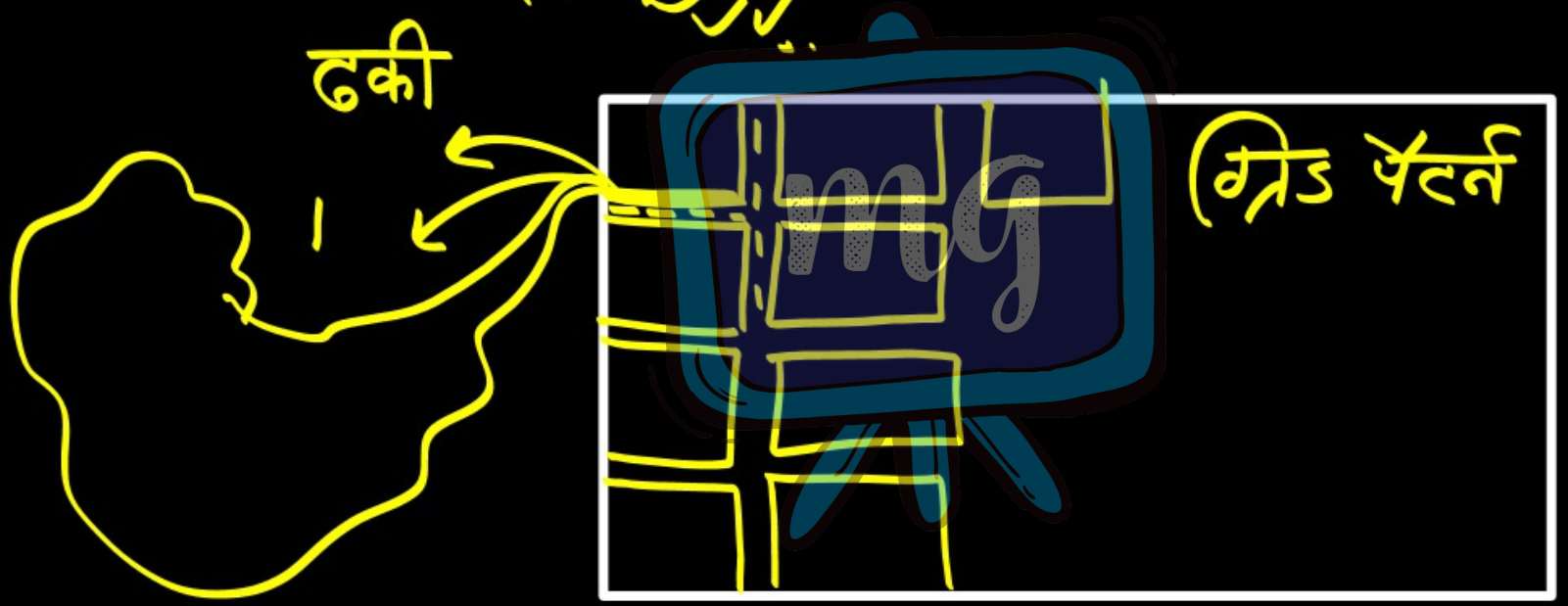

ग्रिड पैटर्न

1. नगरों में नालियों का जाल बिछा हुआ था। पहले नालियों के साथ गलियों में बनाया गया था और फिर उसके आसपास आवासों का निर्माण किया गया था। मकानों से आने वाली नालियां गली की नाली से मिलती थी। प्रत्येक मकान की कम से कम एक दीवार गली से सटी होती थी ताकि मकानों के गंदे पानी को गलियों की नालियों से जोड़ा जा सके।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. मुख्य नाले ईंटों के बने थे तथा सफाई के लिए भी ऐसी ईंटों से ढके रहते थे जो हटायी जा सके। कई स्थानों पर ढकने के लिए चूने पत्थर की पट्टी का उपयोग करते थे।

3. घरों की नालियां पहले एवं होदी या मलकुंड में खाली होती थी जिनमें ठोस पदार्थ जमा हो जाता था और गंदा पानी गली की नालियों में बह जाता था। इन नालों से गंदा पानी शहर के बाहर निकाल दिया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

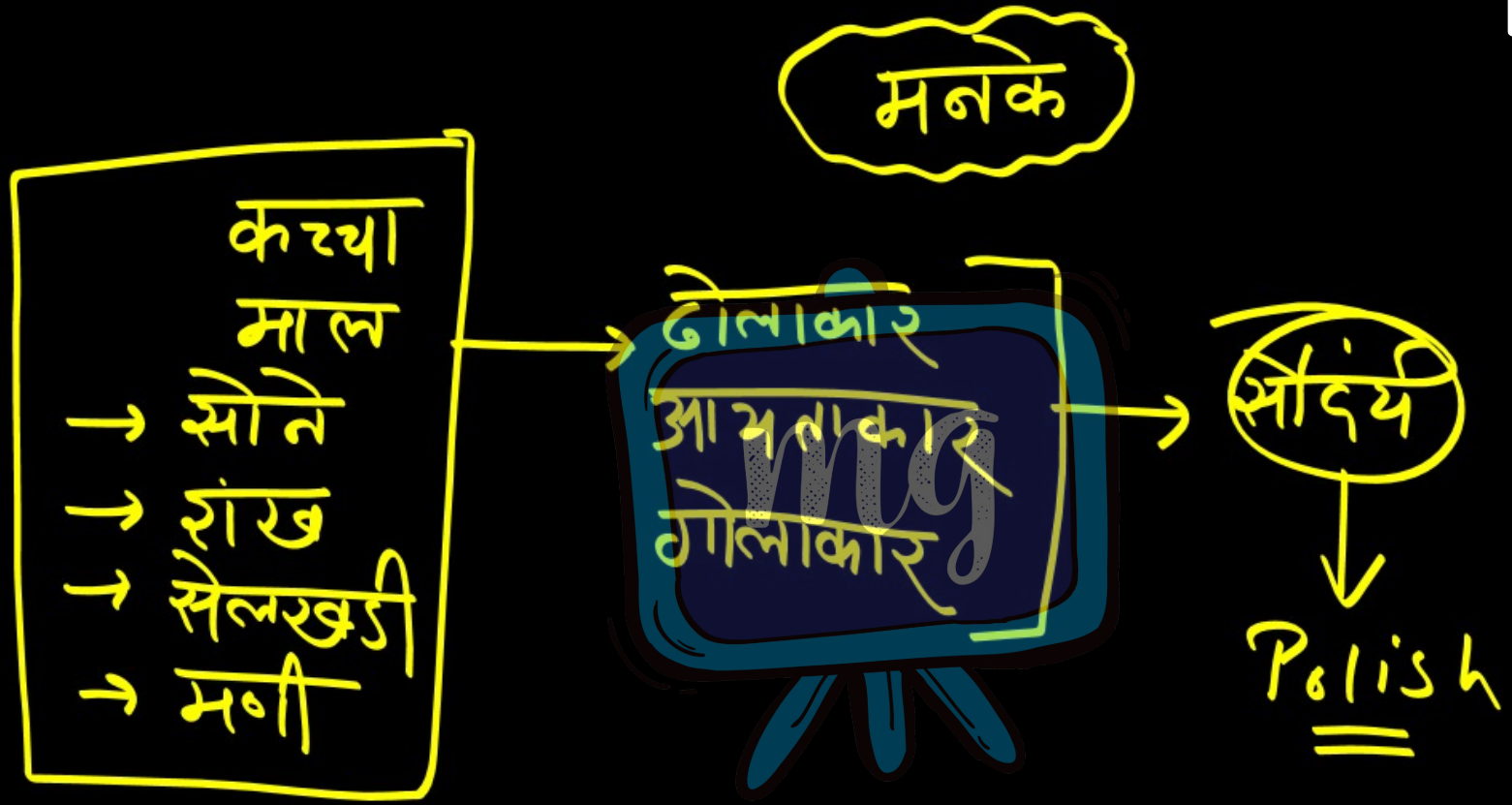

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

4. हड़प्पा सभ्यता में मनके बनाने के लिए प्रयुक्त पदार्थों की सूची बनाइये। कोई भी एक प्रकार का मनका बनाने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर : मनके बनाने के लिए अनेक पदार्थों का प्रयोग किया जाता था। कार्निलियन नामक सुंदर लाल पत्थर के, जैस्पर, स्फाटिक, क्वार्टज, सैलखड़ी नामक पत्थर से तथा तांबा, सोना, कांसा जैसी धातुओं से तथा शंख, फयान्स व पक्की मिट्टी के मनके बनाये जाते थे। चन्हूदड़ों के मनके बनाने का कारखाना था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कार्निलियन का लाल रंग, पीले रंग के कच्चे माल तथा उत्पादन के विभिन्न चरणों में मनकों को आग में पकाकर प्राप्त किया जाता था।
- पत्थर के पिण्डों को को पहले अपरिष्कृत आकारों में तोड़ा जाता था। फिर बारीकी से शल्क निकालकर इन्हें अंतिम रूप दिया जाता था।
- इसके बाद घिसाई, पॉलिस और इनमें छेद करने के साथ ही मनके बनाने की प्रक्रिया पूरी होती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सेलखड़ी से मनके बनाने की प्रक्रिया : सेलखड़ी के चूर्ण के लेप को सांचे में ढाल कर मनके तैयार किये जाते थे।

इससे ठोस पत्थरों से बनने वाले केवल ज्यामितीय आकारों के विपरीत कई विभिन्न आकारों के मनके बनाये जा सकते हैं

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



5. चित्र का वर्णन करो। शव किस प्रकार रखा गया है? इसके समीप कौनसी वस्तुएं रखी गयी हैं? क्या शरीर पर कोई पुरावस्तुएं हैं? क्या इनसे कंकाल के लिंग का पता लगता है?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

- चित्र में एक हड़प्पाई शव है।
- शवाधान में एक कंकाल दफन है।
- शव उत्तर दक्षिण दिशा में रखा गया है।
- शव के पास कुछ बर्तन व अन्य वस्तुएं रखी हुई हैं। जो आत्मा एवं पुर्नजन्म के विश्वास को बताती है।
- शव पर एक चूड़ी है जो इंगित करती है कि यह एक महिला का कंकाल है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पुर्नजन्म



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

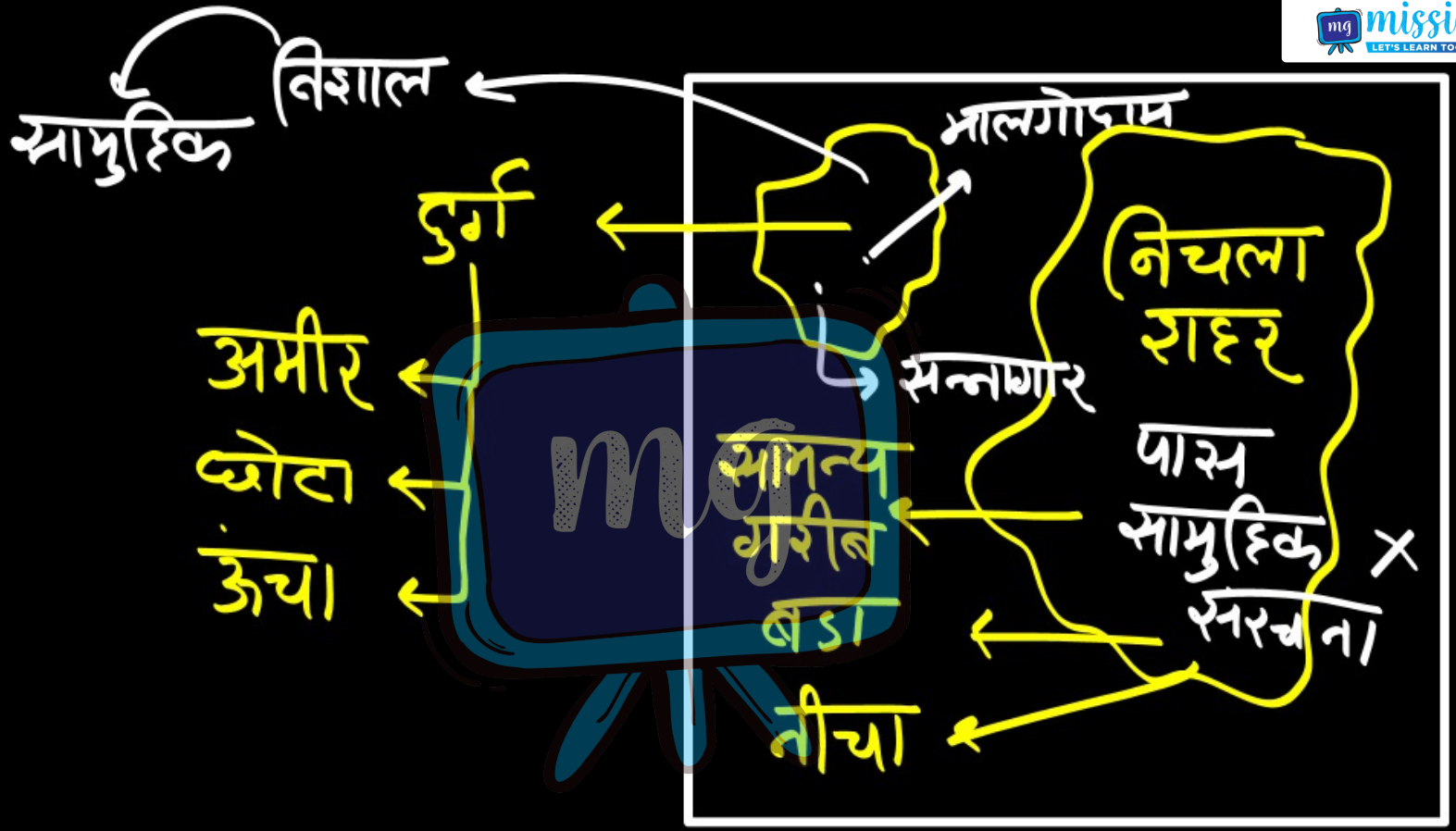

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मोहनजोदड़ो

700+ कुएँ

गृह स्थापत्य

1) 1, 2 तल
2) खिड़की ×
3)  आंगन
5) स्नानघर → ईंटों

नगर नियोजन

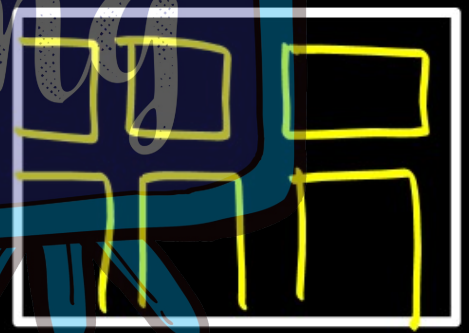

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

6. मोहनजोदड़ों की कुछ विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : मोहनजोदड़ों (एक नियोजित शहरी केन्द्र) :- पहले बस्ती का नियोजन

सबसे प्रसिद्ध पुरास्थल

बस्ती दो भागों में विभाजित :

1. दुर्ग (पश्चिमी भाग) [छोटा लेकिन ऊंचाई पर बसा हुआ]।
   - संरचनाऐं कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी।
   - निचले शहर से अलग करने के लिए दीवार का घेरा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. निचला शहर (पूर्वीभाग) [बड़ा लेकिन नीचे बनाया गया]।

- यह भी दीवार द्वारा घेरा गया था। लेकिन फिर भी कई भवन ऊँचे चबूतरों की नींव पर बने थे।
- नियोजित जल निकास प्रणाली की अनूठी विशिष्टता थी।
- पहले नालियों के साथ गलियों को बनाकर फिर उसके अगल-बगल आवासों का निर्माण किया।
- सड़कें व नालियां ग्रिड पद्धति से बनायी थी जो एक दूसरे को समकोण पर भी काटती थी।

दुर्ग : विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों की संरचनाएँ मिली हैं।

(i) मालगोदाम :-

- ईंटों से बने इनके निचले हिस्से ही शेष हैं। ऊपरी हिस्से संभवत: लकड़ी के बने होने के कारण नष्ट हो गये।

(ii) विशाल स्नानागार :-

- चारों ओर से गलियारों से घिरा।
- तल तक जाने के उत्तरी व दक्षिणी भाग में सीढियाँ
- जलाशय के किनारों पर ईंटों को जमाकर तथा जिप्सम के गारे का प्रयोग कर इसे जलबद्ध किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके तीनों ओर कक्ष बने हैं, जिसमें 1 में 1 बड़ा कुआँ हैं।
- जलाशय का पानी एक बड़े नाले में जाता है।
- दूसरी ओर 8 स्नानघर हैं।
- ये स्नानघर एक गली के दोनों ओर 4–4 हैं।
- प्रत्येक स्नानघर की नालियां गली के नाले से मिलती है।
- इसकी विशालता एवं अनोखापन यह दर्शाता है कि इसका प्रयोग किसी विशेष आनुष्ठानिक स्नान के लिए होगा।

गृह स्थापत्य :-

- निचले शहर में आवासीय भवन के शानदार
- भवनों में बीच में आँगन था जिसके चारों ओर कमरे बने थे। संभवत: यह ऑगन खाना खाना पकाने और कताई करने का केन्द्र था। गर्म एवं शुष्क मौसम में।
- लोग अपनी एकांतता को महत्व देते थे क्योंकि भूमितल की दीवारों में खिड़कियां नहीं है तथा मुख्य द्वार से आंतरिक भागों तथा आंगन का सीधा अवलोकन नहीं होता।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- प्रत्येक घर में ईंटों के फर्श का स्नानाघर था जिसकी नालियां दीवार के माध्यम से सड़क की नालियों से जुड़ी हुई थीं।
- दूसरे तल या छत पर जाने के लिए सीढ़ियों के अवशेष मिले हैं।
- कई भवनों के सबसे बाहरी कक्ष में जो प्रवेश द्वार पर होता था उनमें कुएं मिले हैं जो संभवत: राहगीरों के लिए प्रयुक्त किये जाते होंगे।
- मोहनजोदड़ों में लगभग 700 कुऐं मिले हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विशेष अभियान

7. हड़प्पा सभ्यता से शिल्प उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल की सूची बनाइये तथा चर्चा कीजिए कि वे किस प्रकार से प्राप्त किये जाते होंगे।

उत्तर : कच्चे माल की सूची :

क्र.सं.	कच्चा माल	स्त्रोत
1.	सोना	दक्षिण भारत में कोलर से
2.	तांबा	खेतड़ी राजस्थान, ओमान → निकल
3.	शंख	नागेश्वर तथा बालाकोट
4.	कार्निलियन	भड़ूच गुजरात
5.	सेलखड़ी	दक्षिणी राजस्थान व उत्तरी गुजरात तथा बलूचिस्तान
6.	लाजवर्द मणि	शोर्तुघई अफगानिस्तान
7.	चांदी	मेसोपोटामिया, ईरान तथा अफगानिस्तान

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कच्चा माल प्राप्त करने के तरीके : मिट्टी तथा कुछ कच्चे माल स्थानीय स्तर पर उपलब्ध थे परन्तु पत्थर, लकड़ी तथा धातु जालढक मैदान से बाहर के क्षेत्रों से मंगाने पड़ते थे। हड़प्पा सभ्यता के लोग कच्चा माल प्राप्त करने के लिए निम्न उपाय करते थे –

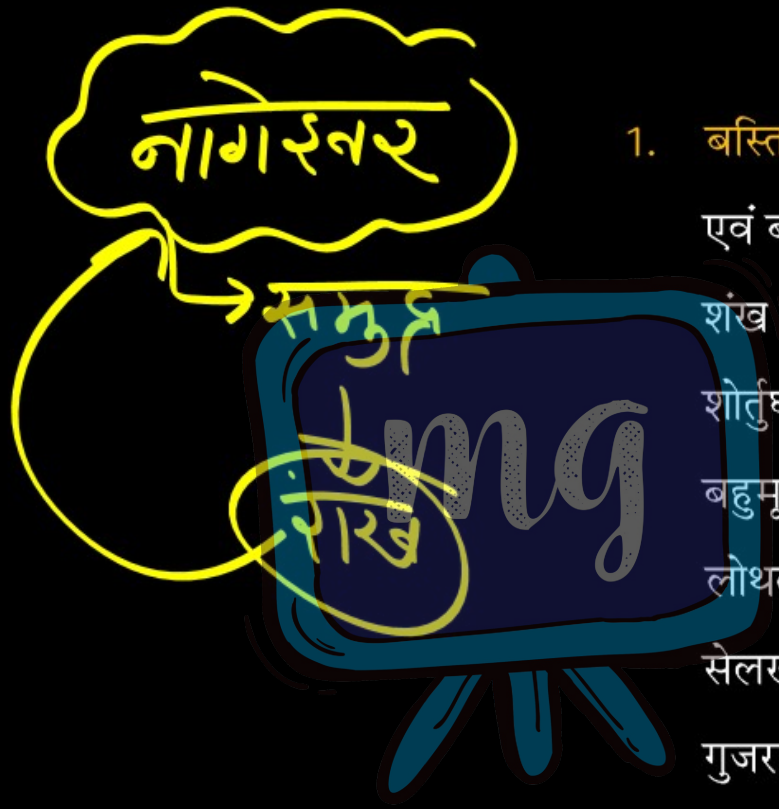

1. **बस्तियां स्थापित करना :** हड़प्पावासियों ने नागेश्वर एवं बालाकोट में बस्तियां स्थापित की क्योंकि वहां शंख आसानी से उपलब्ध है। अफगानिस्तान में शोर्तुघई में बस्तियां बनायी क्योंकि उसके निकट बहुमूल्य नीले रंग का लाजवर्ड मणि प्राप्त होता था। लोथल भी कार्निलियन के स्त्रोता (गुजरात में भरूच सेलखड़ी के स्त्रोत), (दक्षिणी राजस्थान व उत्तरी गुजरात) तथा धातु स्त्रोत (राजस्थान) के निकट था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. **अभियान भेजना :** हड़प्पावासी कच्चा माल प्राप्त करने के लिए बाहर के स्थलों में अभियान भेजते थे। राजस्थान के खेतड़ी से तांबे तथा दक्षिण भारत में सोने के लिए अभियान भेजते थे। इन अभियानों के माध्यम से स्थानीय समुदायों के साथ संपर्क स्थापित किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मेसोपोटामिया
ओमान-मगान
बहरीन-दिलमुन



3. **सुदूर क्षेत्रों से संपर्क :** ओमान तथा मेसोपोटामिया से संपर्क था। ओमान से तांबा प्राप्त करते थे जिसमें निकल होता था। मेसोपोटामिया से भी व्यापारिक संपर्क था। चांदी ईरान अथवा मेसोपोटामिया मंगाई जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

8. चर्चा कीजिए कि पुरातत्वविद किस प्रकार अतीत का पुन: निर्माण करते हैं।

उत्तर : पुरातत्वविदों की खुदाई के दौरान अनेक प्रकार के शिल्प तथा (मुहरें, मनकें आदि) प्राप्त होते हैं इन तथ्यों से वे अन्वेषण एवं विश्लेषण करके व्याख्या करते हैं। इन वस्तुओं में मृदभाण्ड औजार, आभूषण, घरेलू सामान, मुहरें आदि उल्लेखनीय है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. हड़प्पा सभ्यता के क्षेत्र की जानकारी : पुरावस्तुओं के अवशेषों के आधार पर हड़प्पा सभ्यता का विस्तार अफगानिस्तान, बलुचिस्तान, सिन्ध, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात एवं उत्तर भारत में गंगा की घाटी तक व्यापक था।

2. **नियोजित शहरी केन्द्र :** मोहनजोदड़ो दो भागों में विभाजित था

(i) ऊँचाई पर बना दुर्ग तथा

(ii) निचले भाग में बसा विस्तृत शहर इनसे पुरातत्वविदों ने लोगों के स्तर का पता लगाया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

3. **धार्मिक जीवन के बारे में जानकारी :** हड़प्पा की खुदाई में मातृदेवी की मूर्तियां मिली हैं जिससे अनुमान लगाया जाता है कि ये लोग मातृदेवी की उपासना करते थे।

खुदाई में मिली एक मुहर में देवता की मूर्ति भी अंकित है जो योगासन में बैठा है तथा जानवरों से घिरा हुआ है। इसे 'आद्य शिव' की संज्ञा दी गयी है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लिंग व छल्ले भी मिले हैं। अत: अनुमान लगाया है कि वे शिव व लिंग की पूजा करते थे। मुहरों पर वृक्ष, पशु पक्षिों के चित्र मिले हैं। अत: वे लोग वृक्षों, पशु पक्षियों की पूजा करते थे।

4. भोजन के बारे में जानकारी : जले दानों व बीजों से भोजन की जानकारी मिली है। जैसे – गेहू, जौ, दाल, सफेद चना, तिल, बाजरा, चावल के दाने मिले हैं। उत्खनन में भेड़, बकरी, भैंस, सुअर की हड़िडयां मिली हैं। शाायद वे इन जानवरों के उत्पाद व मांग प्रयोग करते होंगे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

5. **आर्थिक जीवन के बारे में जानकारी :** मुहरों में वृषभ के चित्र, मिट्टी के हल के प्रतिरूप, जुते हुए खेतों के साक्ष्य, फसल काटने के औजार बताते हैं कि कृषि कार्य किया जाता था।

नहरों, कुओं तथा जलाशयों के अवशेष बताते हैं कि सिंचाई भी करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

6. **सुदूर क्षेत्रों से संपर्क :** ओमानी तांबे में निकल के अंश पाये जाते है। ऐसा ही तांबा हड़प्पाई पुरावस्तुओं में मिला है। अत: ओमान से संपर्क था। एक बड़ा हड़प्पाई मर्तबान ओमान में मिला है वह भी यह दर्शाता है। साथ ही मेसोपोटामिया के लेख भी मेलुहा से संपर्क को बताते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

7. सामाजिक एवं आर्थिक भिन्नताओं की जानकारी : शवाधान में तथा विलासित की वस्तुओं से तथा दुर्ग व निचले शहर के अवशेषों से सामाजिक एवं आर्थिक भिन्नताओं का पता लगता है।

8. कला कौशल : शिल्प कार्य पूरे हड़प्पाई क्षेत्र में फैला था। मूर्तियां, आभूषण, बर्तन, औजार और हथियार मिले हैं। साथ ही मनके, बांट, बहुमूल्य पत्थरों का उपयोग करके तथा सोना, तांबा, चांदी से मनके बनाने से पता लगता है कि कला के क्षेत्र में भी वे अग्रणी है।

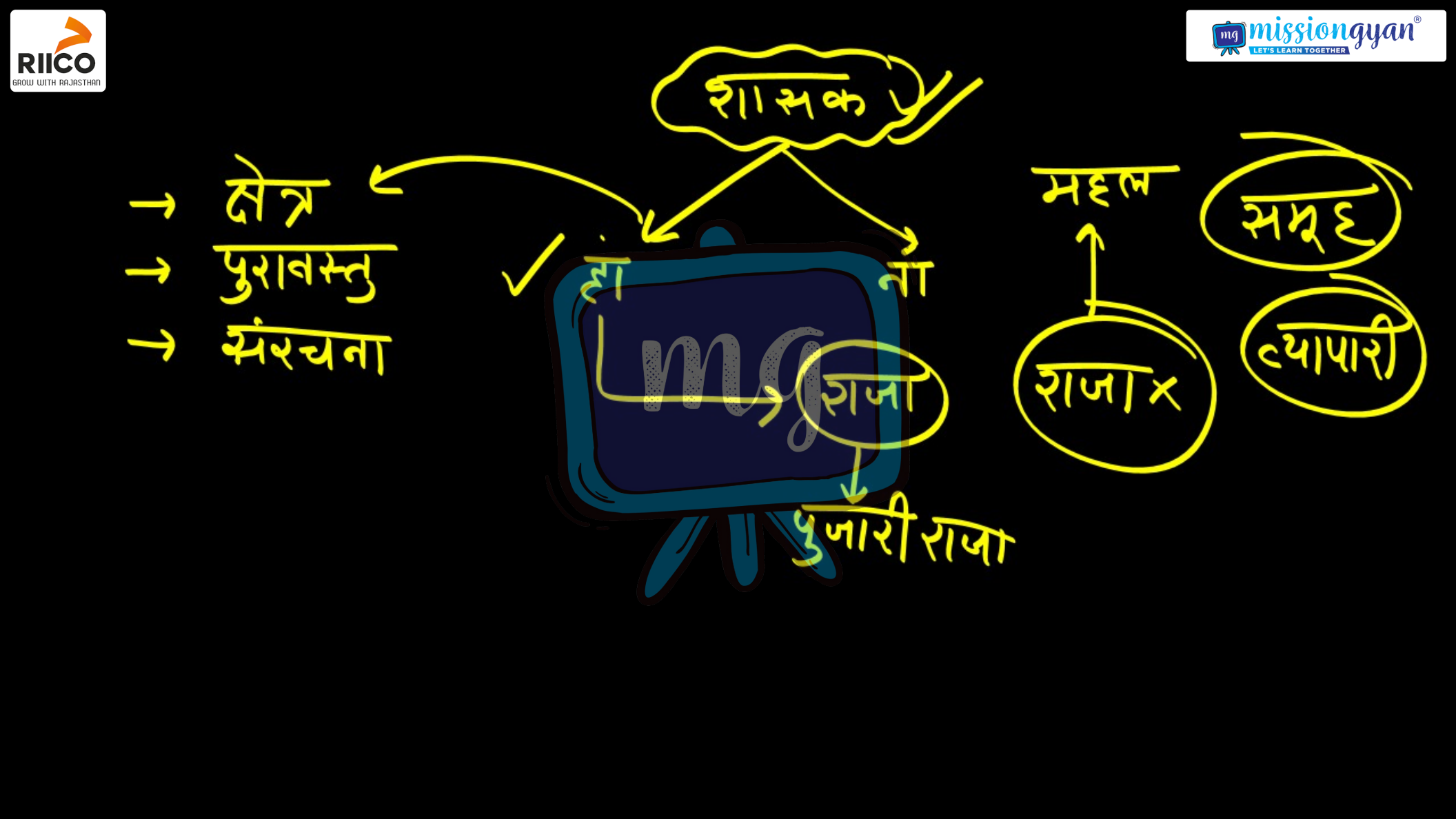
शासक
क्षेत्र
पुरावस्तु
संरचना
हां
ना
महल
राजा ×
समूह
व्यापारी
राजा
पुजारी राजा

9. हड़प्पाई समाज में शासकों द्वारा किये जाने वाले संभावित कार्यों की चर्चा कीजिए–

उत्तर : हड़प्पाई समाज में शासकों द्वारा किये जाने वाले संभावित कार्य निम्नलिखित थे :–

1. जटिल निर्णय लेकर उन्हें कार्यान्वित करना : हड़प्पाई पुरावस्तुओं में असाधारण एकरूपता दिखाई देती है जैसे कि मृदभाण्डों, मुहरों, बांटों तथ ईंटों से स्पष्ट है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. **श्रम संगठित करना :** विशिष्ट स्थानों पर बस्तियां स्थापित करना, ईंटें बनाना, विशाल दीवारें बनाना, भवन बनाने, मालगोदाम एवं विशाल स्नानागार बनाने के लिए बड़ी संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती ह थी अतः यह कार्य शासक वर्ग द्वारा ही संभव था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

3. **नियोजित नगर बनाना :** नियोजित नगरों की कार्ययोजना बनाना, निर्माण शैली तथा नगरों की आवास व्यवस्था में समनता तथा एकरूपता दिखाई देती है जो शायद शासन वर्ग द्वारा ही की गयी होगी।

4. **सड़क निर्माण :** सड़कें पर्याप्त चौड़ी तथा समकोण पर काटती थी।

5. **नालियों की व्यवस्था :** नगरों में नालियों का जाल बिछा हुआ था। ये नालियां ईंट अथवा पत्थर से ढकी होती थी। ये समस्त कार्य शासकों द्वारा किये जाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

6. **भवन निर्माण :** मकान पक्की ईंटों के बने होते थे। मकानों में आंगन, स्नानाघर, दरवाजे, खिड़कियां तथा सीढ़ी की व्यवस्था थी। ईंटों की लंबाई, चौड़ाई तथा ऊंचाई का अनुपात भी निश्चित था। अनेक विशाल भवन भी मिले हैं।

7. **तोल तथा माप के साधन :** पूरे हड़प्पा क्षेत्र में समान पद्धति के बांटों का प्रयोग किया जाता थ। माप के साधन भी प्रचलित थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

8. **बस्तियां स्थापित करना :** शिल्प उत्पादन के लिए कच्चे माल की प्राप्ति के लिए बस्तियां स्थापित करने का कार्य शासक द्वारा ही संभाव था।
9. **अभियान भेजना :** शासक वर्ग की ओर से कच्चा माल प्राप्त करने के लिए अभियान भेजे जाते थे। खेतड़ी से चांदी तथा दक्षिण से सोना प्राप्ति के लिए अभियान भेजे जाते थे।
10. **सुदूर क्षेत्रों से संपर्क :** ओमान, बहरीन तथा मेसोपोटामिया से संबंध भी शासक वर्ग द्वारा ही रहे होंगे।

10. मानचित्र 1 पर उन स्थलों पर पेन्सिल से घेरा बनाइये जहां से कृषि एवं शिल्प उत्पादन के साक्ष्य मिले हैं।

उत्तर : कृषि

हल – चोलिस्तान तथा बनावली

जुते हुए खेत – कालीबंगन

कुएं – मोहन जोदड़ो

नहर – शोर्तुघई

जलाशय – धौलावीरा

कृषि के साक्ष्य मिलने वाले स्थान



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



मनके बनाने के स्थल :

चन्हुदड़ों, लोथल, धौलावीरा

शंख के उत्पाद :

नागेश्वर, बालाकोट

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शिल्प उत्पादन के साक्ष्य मिलने वाले स्थान

